तुलसी
कॉमिक्स
संख्या 12
शालू-कालू
और
मोटर साईकिल की सैर
http://www.orkut.co.in/Main#Community?cmm=97630164

रितुराज का
इच्छाधारी साँप सीरीज
का सनसनीखेज कॉमिक्स
तौसी और धरती के शैतान

वेद प्रकाश शर्मा का
सुपर कम्प्यूटर सीरीज
का हंगामाजनक कॉमिक्स
जम्बू दी ग्रेट

अंगारा का आतंक

मेंढकी का पति

मेंढकी का पति

शालू कालू और
मोटर साइकिल की सैर

आकाश पुत्र

सम्पादक : प्रमिला जैन   कथानक व चित्रांकन : इन्दु फीचर्स

कालू नयी मोटर साईकिल खरीदकर लाया. शालू ने जब मोटर साईकिल देखी तो...

हाय! कालू प्यारे तू नयी मोटर साईकिल लाया है!

हां! नयी खरीद कर लाया हूं. आज इस पर सारा शहर घूमूंगा.

मेरे पास तो कोई हेलमेट है नहीं. कहां से लाऊं, तू मुझे ऐसे ही ले चल.
नहीं! ऐसे तुम्हें मैं अपने साथ नहीं ले जाऊंगा. पहले तुझे हेलमेट पहनना ही पड़ेगा.

हां, याद आया! हमारे कबाड़खाने में एक पुराना हेलमेट पड़ा तो है. देखें शायद वही काम आ जाये.
फिर जल्दी कर! और उसे ढूंढ... मैं सारा दिन यहां खड़ा तेरा इंतजार नहीं करता रहूंगा.

और इंतजार नहीं होता. मुझे चलना चाहिये.

मैं आ गयी कालू ! देख, कबाड़खाने से हेलमेट मिल गया!
जल्दी बैठ, देर हो रही है.

एक मिनट रुक तो जाओ, कालू भाई. इसे हाथ में लेकर थोड़े ही बैठूंगी. सिर पर पहन तो लेने दो.

यह लो. मैंने पहन लिया हेलमेट.
अब जल्दी से उछल कर इस पर सवार हो जाओ!

मुझे कसकर पकड़ के बैठना वरना तू पीछे से गिर जायेगी अच्छा!
एक मिनट कालू ये हेलमेट जरा ढीला है- इसे कस लूं.

कालू चल पड़ा-
शालू! संभल कर. मैं रेस दे रहा हूं.
हां! अब ठीक है. हेलमेट फिट आ गया.
ब्रू SSM

अबे ओ मोटे बैंगन, मुझे छोड़ के कहां जा रहा है?
ब्रू SSM

ब चा ओ!
व्रूSSम

तड़ाक
आह!

यही तो जिन्दगी है, क्यों शालू ...?

अरे! शालू, कहां गयी... कम्बख्त से कहा भी था, मुझे पकड़कर बैठना.

अबे देख के!
कम्बख्त ने क्या मोड़ काटा है.
हाय लग गयी.
ची ची ची
भड़ाम

शालू की बच्ची बीच सड़क में बैठकर क्या कर रही है?
पकौड़े तल रही हूं- मोटे!

पकौड़े तलने बंद कर और जल्दी से पीछे बैठ. मैंने तुझे पहले ही कहा था कि मुझे देर हो रही है पर...

बेवकूफ! मैं पकौड़े नहीं तल रही. मैं मोटर साईकिल के पीछे से गिर पड़ी थी. और मेरा सिर इस सड़ियल हेलमेट में फंस गया है.

अच्छा! ला, मैं इसे तेरे सिर से निकालता हूं.
कोशिश कर के देखो.

अभी निकालता हूं- यह हेलमेट. तू चिन्ता ना कर.
ध्यान से.

अबे निकल, निकल तू तो जोंक की तरह चिपक गया.
आऽऽऽई!

हाय! तू तो मेरे कानों में दर्द कर रहा है. ढंग से निकाल.
चुर्र र्र! तेरे कान हाथी जितने बड़े तो हैं नहीं जो दुखेंगे.

इसे खाली हाथों से तो नहीं निकाला जा सकेगा. कोई और तरकीब लड़ानी होगी.
मैं कहां हूं. कालू!

अब तो औजारों का सहारा लेना होगा. आ जा!
आ गयी.

अपना सिर नीचे झुका... हां, थोड़ा और.
मुझे कुछ पता नहीं लग रहा कि तू मेरे साथ क्या कर रहा है. और मुझे तेरा किया पसंद भी नहीं आ रहा.

मैं तुझे दो ही झटकों में इस हेलमेट से बाहर निकाल दूंगा.
मुझे चोट मत पहुंचाना - कालू भाई!

अरे! तू मुझ पर भरोसा रख. कोई चोट नहीं लगेगी.
आऽऽ ई! आराम से!

ओय-ए-'ओय! अबे निकल आ इस नामुराद सिर से!

आहा! निकल आया.
धाड़!

क्या निकल आया - कालू. मैं तो अभी वहीं खड़ी हूं, जहां खड़ी थी.
गुर्र र! अब कुछ और ही तरकीब लड़ानी होगी.

अब देखना, शालू. एक ही वार में हेलमेट बाहर होगा और तू आजाद!
अर रे ! अब तू क्या करने वाला है- कालू.

मुझे तो चोट नहीं लगेगी ना!
तू बिलकुल फिक्र मत कर तुझे कुछ नहीं होगा.

हाय ! मार डाला !
धाड़!
अबे निकल... निकल कम्बख्त ने परेशान ही करके रख दिया.

आय! मेरे कानों में घण्टियां बज रही है.
अभी तो घंटी बजी है. दूसरे वार में तबला बजेगा. जमकर खड़ी रह!
अब आया मेरा दूसरा वार.
हाय! पता नहीं यह जालिम मेरे साथ क्या करने वाला है.
आंय! ये तो नीचे झुक गयी.
अर ऽऽ र! ओ ऽऽऽ आह ऽऽ!
हाय! मैं कहां हूं? इस धरती पर हूं या आकाश में.
तेरा तो पता नहीं लेकिन मैं कहां हूं?

हाय! मैं क्या करूं?
गुर्र र्र! अब तो इसका हेलमेट उतारने के लिये कुछ न कुछ करना ही होगा. अगर ना उतरे तो ऐसा जुगाड़ करना होगा कि ये देख सके.

आहा! आ गया आईडिया

क्यों कैसी रही शालू? अब तो नज़र आ रहा है ना.
हां-बिलकुल सब नजर आ रहा है.

मुझे नजर तो सब आ पर मैं चाहती हूं कि यह तरह उतरे.

तेरे साथ हमेशा ये प्रोब्लम रहती है कि तेरे लिये जितना कर दो लेकिन तू कभी संतुष्ट नहीं होती
हाय!

बेचारी शालू.
वो कहता है-हेलमेट तभी उतर सकता है जब मेरा सिर छोटा हो जाये और मेरा सिर तब छोटा होगा, जब मैं बूढ़ी हो जाऊंगी. हाय... बीस साल तक इंतजार करना पड़ेगा.

समाप्त

रिकार्ड प्लेयर

अंधेरी रातों में... सुनसान राहों पर एक फरिश्ता निकलता है जिसे लोग शहंशाह कहते हैं SSS...!

अब कालू उलटा लेटकर गाना गाता है.
ओ ना ना जाने दो मुझे जाना है... वादा जो किया है वो निभाना है... आज किसी से मुलाकात है- मेरी SS
लगता है आज इसके पेंच ढीले हो गये हैं.

क्या बात है- कालू. पहले तू सीधा लेटकर कोई और गाना गा रहा था और फिर तू उलटा होकर दूसरा गाना गाने लगा. आखिर बात क्या है?

अरी पगली! तू भी बड़ी भोली है. भला रिकार्ड में दोनों तरफ गाने नहीं होते. बस पहले एक साइड बजाया अब दूसरी साइड बजा रहा हूं.
आंय!

शालू
का
कुत्ता

हाय ! कम्बख्त मुझे घूरे जा रहा है. नाश्ता भी नहीं करने दे रहा.

शालू !
आई !

बोलो, क्या बात है?
शालू ! तुम्हारा यह कुत्ता मुझे घूर-घूरकर देख रहा है... कम्बख्त नाश्ता भी नहीं करने दे रहा.

क्या इसने कभी किसी को आमलेट खाते पहले नहीं देखा जो मुझे घूरे जा रहा है.
नहीं तो बात नहीं है.
तो फिर क्या बात है?

बात दरअसल ये है कि आमलेट खाते तो कई बार देखा है, लेकिन तुझे अपनी प्लेट में खाते पहली बार देख रहा है.
क्या !

मोटा लाला

ए भाई जरा सुनना !
अरे ! कोई हमें आवाज दे रहा है !
हां.

कहिए, क्या बात है?

क्यों भईया एक बात बताना !
एक क्यों जी, दो बात पूछो, हम तो हाजिर हैं.

क्यों भाई. इस गली में से निकल कर मैं बाजार पहुंच जाऊंगा?

आपका तो पता नहीं - पिछले हफ्ते एक हाथी तो निकलकर पहुंच गया था.
आंय

तांगेवाला

शालू-कालू को घण्टाघर जाना था.
चल शालू! तांगे में बैठते हैं!
हां, चलो... तांगे वाले से बात करते हैं.

अरे! इस तांगेवाले ने तो अपने घोड़े को हरे रंग का चश्मा पहना रखा है.
चलकर पूछते है. इसने ऐसा क्यों कर रखा है?

दोनों उसके पास पहुंचते है.
ए भाई सुनो... तुमने अपने घोड़े को हरे रंग का चश्मा क्यों पहना रखा है.

घास सूखी है। हरा चश्मा पहनने से इसे हरी दिखाई दे, इसलिये.
आंय!
हैं!

लंगड़ा
भिखारी

शालू-कालू सड़क पर जा रहे थे.
आठ आने दे दो-बाबू जी! चाय पी लूंगा.

अगर तुम लंगड़े होने की बजाय अंधे होते तो ज्यादा पैसे कमा लेते.

बाबू जी! वह भी बनकर देख लिया उसमें तो खोटे पैसे मिलते हैं.
ऐं!
आंय!

गधे की औलाद

शालू-कालू की आपस में लड़ाई हो गई. दोनों एक-दूसरे को गालियां देने लगे—
तू गधे का बच्चा!
तू गधे की बच्ची!

तभी उधर से एक गधा-गधी गुजरे—
क्यों जी, आप इन्हें देखकर रुक क्यों गये.
तू गधे की बच्ची!
नहीं! तू गधे का बच्चा!

भागवान! जरा ठहर तो, इन दोनों का फैसला हो जाने दे- अपनी औलाद को साथ ही लेकर चलेंगे.
कितना नेक ख्याल है जी, आपका. ही-ही-ही!
नहीं. तू है तू!
मैं नहीं तू है गधे का बच्चा!

कालू की आंखें कमजोर थीं. वह चश्मा लगवाकर आया–

इस चश्में को पहनकर तुम्हारी शक्ल बिलकुल उल्लू जैसी लग रही है!

अखबार और रेडियो
और यह कपिल देव का चौका.
वाह!
शालू, एक बात बता रेडियो और अखबार में क्या फर्क है?
हम रेडियो को अखबार की तरह नहीं जला सकते.
तू-तू, मैं-मैं
शालू! आज मेरी एक गुण्डे से तू-तू, मैं-मैं हो गयी.
फिर?
मुझे जूतों का इस्तेमाल करना पड़ा!
अच्छा.
हां! मैं फौरन जूते पहनकर भाग निकला.
हा-हा!
एक्स रे
क्या बताऊं, मेरी तो कहीं नौकरी ही नहीं लगती.
तू एक साथ कई जगह आवेदन पत्र क्यों नहीं भेजता?
भेजता तो बहुत हूं. पर मेरा फोटो देखकर एक ही जवाब आता है. हमें फोटो भेजिये, अपना एक्स रे नहीं.

आज इतवार का दिन था और टेलीविजन पर सारा दिन प्रोग्राम आने थे. शालू फटाफट नहा धोकर टी. वी. देखने के लिए ड्राइंग रूम में आयी लेकिन यह क्या टी. वी. तो चल ही नहीं रहा था. शालू का सारा प्रोग्राम सत्यानाश हो गया. अब वो सारा दिन क्या करेगी. उसने टी. वी. पर लात जमायी.

कम्बख्त ! जिस दिन भी अच्छे प्रोग्राम आने होते हैं. उसी दिन इसे बुखार चढ़ जाता है. ये ले.

धाड़!

कालू ! टी. वी. चल नहीं रहा था, इसलिये इसे थोड़ा सबक सिखा रही थी.
मतलब?

इसे ठीक कर रही थी. लात जमाने से ये चल पड़ता है.
अच्छा! लात जमाने से ये चल पड़ता है.

अगर लात जमाने से ही टी. वी. चल पड़ते तो लोगों को टी. वी. मैकेनिक बनने की क्या जरूरत थी, तूने इसे और खराब कर डाला.
मैंने, नहीं!

अब तू ही इसे ठीक करेगी, चल!
ल- लेकिन मुझे तो...

...दोनों घर से बाहर आये--
लेकिन कालू, मुझे एरियल ठीक करना नहीं आता
चुप!

छत पर चढ़कर तुझे एरियल ठीक करना होगा.
म- मुझे बड़ा डर लगता है. मैं छत पर नहीं चढूंगी

लेकिन कालू ने जबरदस्ती टूल बॉक्स उसके हाथ में दिया, और ...
चुपचाप ऊपर चढ़ जा यमगादड़ की नातिन वरना तू मुझे जानती है.
लेकिन ऊंचाई से मुझे डर लगता है.

अगर तुझे ऊंचाई से डर लगता है, तो एक बात का ध्यान रख...

... जितनी जल्दी तू 'एरियल' ठीक करेगी. उतनी जल्दी नीचे आ सकेगी. अब डर मत, काम शुरू कर !

ये बढ़िया रहा. इसे ऊपर चढ़ा दिया क्योंकि मुझे खुद ऊंचाई से डर लगता है.

ऊपर-
आज तो गई काम से.

ने नीचे की तरफ देखा.
हाय! जैसे ही नीचे देखती हूं, चक्कर आते है.
अच्छा हो कि मैं नीचे ही ना देखूं काम शुरू करूं.
हाय! आज मैं ऊपर पहुंच जाऊंगी.
आह!
धाड़!
अरे टूल बॉक्स तो छत तोड़कर नीचे गिर गया. अब क्या करूं.
भड़ाम!
अब एरियल को ठीक कैसे करूंगी औजार तो है, नहीं.

और ये टीला हो कर लटक गया है. इसे सीधा करना होगा.

इसे सीधा करके किसी चीज से बांध देती हूं. वरना वो मोटा मेरा दम निकाल देगा.

आह। ! आ गया आइडिया... यही ठीक रहेगा.

मैं अपने इस रिबन से इसे बांध देती हूं.

आहा ! ये ठीक रहा. एरियल सीधा करके बांध दिया.

हाय ! मुझे फिर डर लगने लगा... क्या करूं.

एक ही काम हो सकता है.
आंखें बंद करके नीचे
उतरती हूं.
अचानक-
हाय!
भड़ाम!
आह!
धड़ाम!
हाय!
बड़ाम!

और फिर आखिरी मुकाम.
शुक्र है- रुकी तो सही. लगता है, पाताल में आ गयी.
धड़ाम!

कालू! मैंने एरियल ठीक कर दिया है. अब टी. वी. चल सकेगा.
लेकिन उसकी अब कोई जरूरत नहीं.

क्यों... क्या टी. वी. की बजाय आज तुम मुझे सिनेमा हाल लेकर चल रहे हो, पिक्चर दिखाने!

बेवकूफ! आफत की पुड़िया... तू टी. वी. पर ही गिरी है, इसलिये समझी!
हाय! यह मैंने क्या कर डाला. मेरी सारी मेहनत बेकार गयी

समाप्त

टिकट

कालू बस से आ रहा था.
टिकट... टिकट...! सब अपने-अपने टिकट ले लो भाई:
भाई साहब, तीन टिकट इधर भी देना.

आपके साथ और कौन है.
कोई नहीं.

फिर आप तीन टिकट क्यों ले रहे हैं...?

यदि एक खो जाये तो दूसरा और दूसरा खो जाये तो तीसरा टिकिट काम आ सकता है.

और मान लो यदि तीसरा भी खो जाये तो ?

हा हा
मेरे पास 'पास' भी तो है.
हा-हा
हैं!
हा हा

शालू-कालू – नकल

कालू- तेरा पेपर कैसा गया है.

बिलकुल सादा देकर आ रहा हूं.

नया स्कूटर खरीदा, वो बड़ी शान
आया —

देख शालू ! मैंने नया स्कूटर खरीदा. चल तुझे सैर करा कर लाऊं.

तुझे चलाना तो आता है ना, कहीं मरवा मत देना.

वाह!

अचानक—
कालू, रोक जरा स्कूटर रोक!

क्यों क्या हुआ?
सड़क पर कोई चांदी जैसी चमकीली चीज पड़ी है. जरूर चवन्नी होगी.

तो फिर सोचना कैसा लपक के उठा ला.
अभी लाई.

शालू सड़क पर झुकी—
धत्त तेरे की!

क्यों क्या हुआ?
कम्बख्त ऐसा थूकते है जैसे चवन्नी!

कालू किसी काम से जा रहे थे-

अरे!

शालू! देख, तो वो बेचारा बच्चा कितनी जोर-जोर से रो रहा है. जरूर अपने घर का रास्ता भूल गया होगा.

आ आं...
आ ऊं...

हां, लगता तो ऐसा ही है.

हम उससे उसका
और उसके घर का
पता पूछते हैं.

हां, चल!

आं आं
आ ऊं

दोनों बच्चे के पास पहुंचे.

अले-अले बेटे रोते क्यों हो?

क्या नाम है-तुम्हारा.

ऊं आ

बेचारा बड़ा घबरा गया है. शायद अपने घर का रास्ता भूल गया है.

क्यों ना इसे एक आईसक्रीम खरीद कर दे दें- चुप हो जायेगा.
हां- ये ठीक रहेगा

भईया, इसे एक आईसक्रीम दो.
जी साहब.

दोनों ने उस बच्चे को आईसक्रीम दिलवा दी और वापस उसी जगह आ गये.

हां-तो बेटा, अब अपने पापा का नाम और घर पता बताओ- जिससे हम तुम्हें तुम्हारे घर तक छोड़ आएं.

लेकिन अंकल, उसकी कोई जरूरत नहीं है.

धमकी भरे पत्र

शालू-कालू थाने में रिपोर्ट दर्ज कराने पहुंचे.

समाप्त

छोड़ दे यह मेरा है.
नहीं! यह मेरा है. मैने पैसे खर्च किये है.

मैं तुझे कच्चा चबा जाऊंगा.
मैं तेरी बतीसी झाड़ दूंगा.
क्या बात है, झगड़ा क्यों कर रहे हो?

यह उपन्यास पहले मैं पढूंगा.
पहले मैं.

मैं तुम्हारा फैसला कर सकता हूं. उपन्यास मुझे दो और तुम दोनों कुश्ती लड़ो. मैं उपन्यास उसे दे दूंगा- जो जीतेगा.

मंजूर है.
मुझे भी मंजूर है यह लो उपन्यास.

घमासान लड़ाई शुरू हो गई-
ढिंशुम!
धाड़!
हाय!

इतने लड़े कि दोनों एक-दूसरे पर गिर कर बेहोश हो गये.

हा-हा-हा! इसे कहते है-दिमाग.
रिवाल्वर

तुलसी कॉमिक्स

के आगामी नये सैट के छः नये कामिक्स

वेद प्रकाश शर्मा का

जम्बू सीरीज का अद्‌भुत कॉमिक्स

जम्बू नम्बर दो

रितुराज का

तौसी सीरीज का हैरत अंगेज कॉमिक्स

अप्सरा का बदला

- आजादी की जंग
- महाकाल का तांत्रिक
- शैतानी दानव

आगामी नया उपन्यास
वेद प्रकाश शर्मा
दहेज में
रिवाल्वर
दहेज में रिवाल्वर
वेद प्रकाश शर्मा
10/-
Vintage Collection
http://www.orkut.co.in/Main#Community?cmm=97630164